SRI VENKATESWARA INTERNSHIP PROGRAM
FOR RESEARCH IN ACADEMICS
(SRI-VIPRA)

SRI-VIPRA

Project of 2025:

Report

SVP-2501

" Lok Sahitya me geeton ka mahatav"

IQAC
Sri Venkateswara College
University of Delhi
Benito Juarez Road, Dhaula Kuan, New Delhi
New Delhi -110021

SRIVIPRA PROJECT 2024

Title : Lok Sahitya me geeton ka mahatav

SRI-VIPRA

Name of Mentor: Prof Ram Kishore Yadav Name of Department: Hindi Designation:Professor	Photo :

List of students under the SRIVIPRA Project

S.No	Photo	Name of the student	Roll number	Course	Signature
1		Tulsi Kumari	0323023	B.A(Hons) Hindi	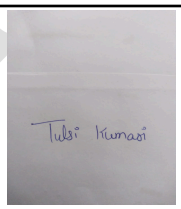
2		Shivam Singh	0323067	B.A(Hons) Hindi	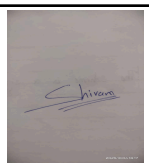
3		Suraj Sharma	0323057	B.A(Hons) Hindi	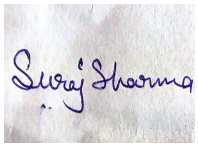
4		Bhawna Kain	0323068	B.A(Hons) Hindi	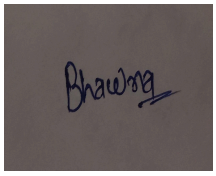
5		Sachin Kumar	0323021	B.A(Hons) Hindi	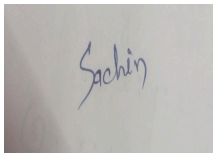

SRI-VIPRA

6		Ritesh Kumar	0323070	B.A(Hons) Hindi	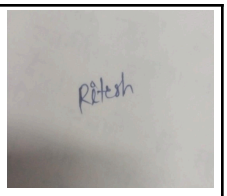
7		Janhvi	0323003	B.A(Hons) Hindi	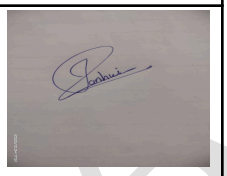
8		Khushi singh	0322017	B.A(Hons) Hindi	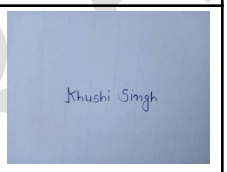
9		Narayan	0322049	B.A(Hons) Hindi	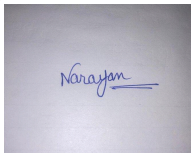
10		Sonu Kumar	0323060	B.A(Hons) Hindi	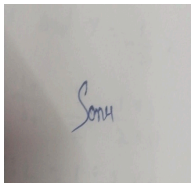

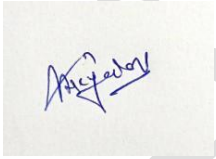

Signature of Mentor

SRI-VIPRA

Certificate of Originality

This is to certify that the aforementioned students from Sri Venkateswara College have participated in the summer project SVP-XXXX titled "**Lok Sahitya me geeton ka mahatav"**.The participants have carried out the research project work under my guidance and supervision from 1st July, 2024 to 30th September 2025. The work carried out is original and carried out in an online/offline/hybrid mode.

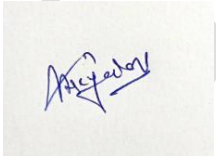

Signature of Mentor

SRI-VIPRA

Acknowledgements

I would like to express my thanks to our principal and college committee to provide this opportunity to works on this project. This will help students to understand about the lok sahitya of different states. Students perform the best as per ability.This will help them to grow in academic journey.

SRI-VIPRA

TABLE OF CONTENTS

S.No	Topic	Page No.
1	Prakathan	0
2	Introduction	1-2
3	Analysis	2-5
4	Explation	3-8
5	Conclusion	9
6	Refrences	10

SRIVERA

SVP 2501

श्री विप्रा 2025–2026

परियोजना कार्य

लोक साहित्य में गीतों का महत्व

शोध निर्देशक

प्रो. राम किशोर यादव

प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग

श्री वेंकटेश्वर कॉलेज

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

शोधार्थीगण

खुशी सिंह – 0322017

नारायण – 0322049

तुलसी कुमारी – 0323023

शिवम सिंह – 0323067

सूरज शर्मा – 0323057

भावना कैन – 0323068

सचिन कुमार – 0323021

रितेश कुमार – 0323070

जाह्नवी – 0323003

सोनू कुमार – 0323060

श्री वेंकटेश्वर कॉलेज

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्राक्कथन

प्रमाणित किया जाता है कि **श्री विप्रा 2025-2026** के तहत लघु शोध कार्य शोधार्थियों का मौलिक प्रयास है। इसमें जिन ग्रन्थों का सहयोग लिया गया है उसका यथास्थान उल्लेख कर दिया गया है।

शोध निर्देशक

प्रो. राम किशोर यादव

प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग

श्री वेंकटेश्वर कॉलेज

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

शोधार्थीगण

खुशी सिंह - 0322017

नारायण - 0322049

तुलसी कुमारी - 0323023

शिवम सिंह - 0323067

सूरज शर्मा - 0323057

भावना कैन - 0323068

सचिन कुमार - 0323021

रितेश कुमार - 0323070

जाह्नवी - 0323003

सोनू कुमार - 0323060

श्री वेंकटेश्वर कॉलेज

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

लोक साहित्य में गीतों का महत्व

लोक साहित्य से अभिप्राय उस साहित्य से है जिसकी रचना लोक करता है। जो लोगों के द्वारा और लोगों के लिए हो। 'लोक' शब्द समस्त जन समुदाय के लिए प्रयुक्त होता है। लोक एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ होता है 'संसार'। जैन ग्रंथ और हिन्दू साहित्य में इसका प्रयोग होता है। 'लोक' मनुष्य समाज का वह वर्ग है जो अभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता और पांडित्य की चेतना अथवा अहंकार से शून्य है जो एक परंपरा के प्रवाह में जीवित रहता है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार–''लोक शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम्य नहीं है, बल्कि नगरों और गांव में फैली हुई वह समस्त जनता है, जिसके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं हैं।''

वैदिक काल से 'लोक' शब्द प्रचलित है। ऋग्वेद के पुरुषसक्त में यह शब्द आया है। वैदिक काल में ही वेद और लोक शब्दावली अपनी–अपनी पृथक सत्ता स्पष्ट कर देती है। पाणिनी ने वेद और लोक शब्दों के भिन्न–भिन्न स्वरूपों का बोध कराया है। भरतमुनि नाट्यधर्मी और लोकधर्मी प्रवृत्तियों को भिन्न बताते उनका उल्लेख करते हैं महाभारत में व्यास जी स्पष्ट कर देते हैं कि प्रत्यक्षदर्शी लोक ही सारे विश्व को सर्वप्रकार से देखने वाला होता है, 'प्रत्यक्षदर्शी लोकाना सर्वदर्शी भवेन्तरः।' इसी प्रकार गीता में भी वेद और लोक का महत्व अलग–अलग प्रतिपादित किया गया है।

भारतीय चिन्तन में 'लोक' शब्द के तात्पर्य को संगत रूप से स्पष्ट करने वाला एक अन्य शब्द 'जन' है। 'जन' उस साम्राज्य के सारे निवासी हैं जो नगर, ग्राम आदि में बसते हैं।

धीरेंद्र वर्मा, ''वास्तव में लोक साहित्य वह मौखिक अभिव्यक्ति है जो भले ही किसी व्यक्ति ने गढ़ी हो पर आज इसे सामान्य लोक समूह अपना ही मानता है। इसमें लोकमानस प्रतिबिंबित रहता है।

कृष्णदेव उपाध्याय के अनुसार, ''सभ्यता के प्रभाव से दूर रहने वाली अपनी सहज अवस्था में वर्तमान जो निरक्षर बनता है उसकी आशा–निराशा, हर्ष–विवाद, जीवन–मरण, लाभ–हानि, सुख–दुख आदि की अभिव्यंजना जिस साहित्य में प्राप्त होती है उसे लोक साहित्य कहते हैं। इस प्रकार लोक साहित्य जनता का वह साहित्य है जो जनता के द्वारा जनता के लिए लिखा गया हो।''

डॉ. रवींद्र भ्रमर के अनुसार, ''लोक साहित्य जनमानस की सहज और स्वाभाविक अभिव्यक्ति

है। यह बहुधा अलिखित ही रहता है और अपनी मौखिक परंपरा द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आगे बढ़ता है।''

डॉ. सत्येंद्र के अनुसार, ''लोक साहित्य के अंतर्गत वह समस्त बोली या भाषागत अभिव्यक्तियाँ आती हैं जिनमें आदिमानव के अवशेष उपलब्ध है।''

अर्थात्, कुल मिलाकर लोक साहित्य का अभिप्राय उस साहित्य से है जिसकी रचना लोक करता है। लोक जीवन की जैसी सरलतम, नैसर्गिक अनुभूतियों का चित्रण लोकगीतों व लोक–कथाओं में मिलता है, वैसा अन्यत्र सर्वथा दुर्लभ है।

लोक साहित्य में लोकमानव का हृदय बोलता है। प्रकृति स्वयं गाती–गुनगुनाती है। लोक साहित्य उतना ही प्राचीन है जितना की मानव, इसलिए जनजीवन की प्रत्येक अवस्था, प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक समय और प्रकृति सभी कुछ समाहित है।

लोक साहित्य के विविध रूप हैं जिनमें मुख्यतः लोक गीत, लोक नाट्य, लोक कथा, लोक गाथा, लोकनृत्य नाट्य, लोक संगीत हैं। इसमें गीत, नृत्य और अभिनय के विविध रूप देखने को मिलते हैं।

लोक में प्रचलित, लोक द्वारा रचित एवं संरक्षित गीतों को लोकगीत कहा जाता है। लोकगीतों का रचनाकार अपने लेखन को लोक–समर्पित कर देता है। लोक गीत किसी एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि पूरे समाज की थाती होते हैं। शास्त्र के किसी नियम की बाह्यता नहीं, मनुष्य के सुख–दुख की तरंग में जो छंदोबद्ध वाणी सहज उत्पन्न करे, वही लोकगीत है।

लोकभाषा में लोक द्वारा रचित स्वं लिखे गए गीतों को लोकगीत के नाम से जाना जाता है, इसे कोई एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूरे लोक समाज अपनाता है। लोकगीत हमारे समाज में प्राचीनकाल से होकर आज तक निरंतर चलती आ रही है, इसे होली, दीपावली, जन्म उत्सव, मुण्डन, जनेऊ, विवाह अदि अवसरों पर बड़े ही मधुर राग से गाये जाते हैं।

स्थानीय भाषा में लोक समाज के द्वारा गाये जाने वाले लोकगीतों में विभिन्न किस्म की ज्ञान, धर्म, इतिहास, रीति रिवाज, संस्कार आदि चीजों की झलक मिलती है। जैसे–बारहमासा और कजरी उ.प्र. के लोकगीत हैं, काजलिया और गोरबंद राजस्थान के लोकगीत हैं।

लोकगीत लोक साहित्य की सबसे प्रधान तथा लोकप्रिय विद्या है। यदि संक्षेप में कहें तो लोक संस्कृति, लोक साहित्य व लोकगीत ना केवल एक–दूसरे से जुड़े हैं, बल्कि एक–दूसरे से प्रभावित भी रहते हैं।

लोकगीत वे गीत हैं जिन्हें सामान्य जनता अपने कण्ठ का हार बनाए रहती है। भारत के लोकगीतों की परंपरा प्राचीन है। संसार में मानव के आर्विभाव के साथ ही लोकगीतों का उद्‌गम माना जाता है।

इसकी प्राचीनता के संबंध में पं. रामनरेश त्रिपाठी जी कहते हैं–''जब से पृथ्वी पर मनुष्य है तब से गीत भी हैं। जब तक मनुष्य रहेंगे तब तक गीत भी रहेंगे। मनुष्यों की भाँति गीतों का भी जीवन–मरण चक्र चलता रहता है।''

पूर्णिमा श्रीवास्तव लोकगीत को परिभाषित करते हुए कहती हैं–''लोक गीत नदी की उस धारा के समान है जो ग्रामीण संस्कृति के गर्भ से निकलकर ना केवल ग्रामीण समाज को माप्लावित करती है वरन् वह अपने शीतल वाणी रूपी जल से समग्र मानव समाज वाले कंकड़, पत्थर और गंदगी को जिस प्रकार से नदी की धारा बहा ले जाती है उसी प्रकार से ग्रामीण जन भी इन गीतों के द्वारा अपने जीवन की विषमताओं और दुखों को भुला देते हैं।''

लोकगीतों की महत्वता को बताते हुए मि. राल्फ विलियम्ज ने कहा है–''लोकगीत न पुराना है न नया, वह तो जंगल के एक वृक्ष के समान होता है जिसकी जड़ें तो धरती में दूर तक (भूतकाल में) धंसी हुई होती है किन्तु जिसमें नित्य नयी–नयी डालियाँ, पल्लव और फूल लगते रहते हैं।''

लोकगीतों की प्रमुख विशेषता प्रथम पंक्ति की बार–बार पुनरावृत्ति करना है जो गीतों को और सौंदर्य प्रदान करता है।

इनमें शब्दों की अपेक्षा भावना को प्रधानता दी जाती है।

लोकगीत में संस्कार संबंधी गीत, ऋतुओं और व्रत संबंधी गीत, देवता संबंधी गीत, जातियों से संबंधी गीत, श्रम संबंधी गीत प्रमुख हैं। समाज में इनके विविध रूप देखने को मिलते हैं।

भारतीय जीवन में धर्म का प्रमुख स्थान है। भारतीय लोगों का धर्म ही प्राण है। जन्म के पहले से होकर मृत्यु के बाद तक कई संस्कारों पर गीत गाने की परंपरा रही है।

इन संस्कारों में पुत्र जन्म, मुण्डन, यज्ञोपवीत, विवाह, गवना, मृत्यु आदि संस्कार आते हैं। और इन्हीं अवसरों पर गाए जाने वाले लोकगीत संस्कार गीत कहलाते हैं।

जैसे–सोहर, खेलौनो, कोहवर, समुझबनी आदि।

लोकगीतों की रचना में किसी न किसी व्रत या त्योहार का वर्णन रहता है। जैसे वर्षा, वसंत आदि ऋतुओं के आने पर जीवन में उल्लास आता है। जिसकी अभिव्यक्ति लोकगीतों द्वारा होती

है।

वर्षा ऋतु में किसान आल्हा, सावन में महिलायें कजली, फागुन के माह में होली या फागुण के गीतों द्वारा अपने मन के भावों को प्रकट करती हैं।

भारत में विभिन्न धर्मों और संप्रदायों के भिन्न–भिन्न देवी–देवता विद्यमान हैं। इनकी स्तुति में गीत गाये जाते हैं जिनके माध्यम से लोग अपनी आस्था को प्रकट करते हैं। राम, कृष्ण, हनुमान, गंगा माता संबंधी गीत इस कोटि में आते हैं।

कुछ लोकगीतों का प्रचलन कुछ प्रमुख जातियों के नाम से होता है। जैसे–अहीरों, कहारों, थोपियों के गीत। इन गीतों में इनकी जीवनशैली व कार्यों का वर्णन रहता है।

कुछ गीत जो किसी विशेष कार्य से जुड़े होते हैं वो श्रम संबंधी गीत कहलाते हैं। उदाहरण के लिए–रोपनी, सोहरी, चरखा, कोल्हू इत्यादि।

लोकगीतों का महत्व किसी विशेष संस्कार, पर्व या उत्सवों पर नहीं है बल्कि मानव जीवन के प्रत्येक क्षण, सुख–दुख से संबंधित हैं क्योंकि ये लोगों में प्रचलित हैं और लोगों द्वारा ही प्रचलित किया गया है। भारतीय संस्कृति का परिचय इन लोकगीतों द्वारा होता है।

इन लोकगीतों की धारा आज भी निरंतर, निर्विघ्न, निर्विकार रूप से सहज एक कण्ठ से दूसरे कण्ठ से प्रवाहित होते हुए बह रही है जिन्हें सुनकर ग्रामीण समाज के रीति–रिवाज, उनकी दिनचर्या, उनकी आर्थिक विषमता, उनकी उल्लास सभी श्रोताओं के समक्ष आने लगता है। इस प्रकार लोकगीत प्राचीन से आधुनिक पीढ़ी के मध्य सूत्रधार के रूप में भारतीय संस्कृति का अंश हैं।

लोकनाटक या लोकनाट्य लोक साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विद्या है। लोक नाटकों का लोक जीवन से अत्यंत घनिष्ठ संबंध है। लोक नाटक दो शब्दों के योग से बना है लोक + नाटक। जब कोई कृति नाट्य रूप को कथावत प्रस्तुत करती है उसे नाटक कहा जाता है। परंतु जन समूह या लोक द्वारा अपनाई गई कोई कृति नाट्यरूप में प्रस्तुत की जाती है तो वह लोकनाट्य कहलाती है।

संवाद के माध्यम से मंच पर अभिनय तथा गीत–संगीत के साथ प्रस्तुत ऐसी कृतियां जिनका रचयिता व्यक्ति विशेष न होकर लोक होता है, जो परंपरा से मौखिक रूप से चली आती है और जिनका निश्चित आलेख नहीं रहता बल्कि कलाकार कथावृत के अंतर्गत स्वयं संताप योजना कर लेते हैं, ऐसे नाटकों को लोकनाट्य कहा जाता है।

श्रीराम शर्मा–वह नाटक लोक नाटक होता है जो लोक स्वभाव से उत्पन्न होकर लोक चिन्त में रमता हुआ लोक धर्म के निर्वाह के साथ लोक सिद्धि को प्राप्त करता है। अतः कहा जाता है कि लोक नाटक लोक जीवन के मनोरंजन उल्लास रोल शिक्षा के आधार हैं।

रामलीला उत्तरी भारत का सर्वाधिक लोकप्रिय एवं महत्वपूर्ण लोकनाट्य है। 'हरि अनंत, हरि कथा अनंत' की भांति राम और राम की लीला की कथा कर्त प्रतिरूप है। राम की कथा का विस्तार भारत में ही नहीं संपूर्ण दक्षिण पूर्वी एशिया तक देखा जा सकता है। लोककाव्य एवं लोक संतापों के माध्यम से राम के आदर्श चरित्र को जनमानस तक पहुँचाने का कार्य रामलीलाओं के मंचन द्वारा किया जाता है।

यह लोक नाटक प्रायः दशहरा उत्सव के अवसर पर खेला जाता है। इस नाटक में राम, सीता और लक्ष्मण के जीवन का वृतांत प्रस्तुत किया जाता है।

समुद्र से लेकर हिमालय तक प्रख्यात रामलीला का आदि प्रवर्तक और है, यह एक विवादास्पद प्रश्न है। ऐसा माना जाता है कि त्रेता युग में श्री रामचंद्र के वन जाने के उपरांत अयोध्यावासियों ने 14 वर्ष की वियोग विधि राम की बाल लीलाओं का अभिनय कर बिताई थी। तभी से इस परंपरा का प्रचलन हुआ था। एक अन्य जनश्रुति से यह प्रमाणित होता है कि इसमें आदि प्रवर्तक मेधा भगत से जो काशी के निवाशा थे। रामलीला में मिलते हैं।

पहले यह महर्षि वाल्मीकि के महाकाव्य 'रामायण' की कथनी और संवादों पर आधारित होती थी। लेकिन आज जिस रामलीला का मंचन किया जाता है उसकी पटकथा गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित महाकाव्य 'रामचरितमानस' की पृष्ठभूमि पर आधारित है।

वास्तविक रूप से रामलीला का शुभारंभ गोस्वामी तुलसीदास द्वारा किया गया है। ऐसी मान्यता है कि काशी के रामनगर से इस लोकनाट्य की शुरुआत हुई है।

रामकथा की नाट्य प्रस्तुति से रामचंद्र भारतीय लोक में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के रूप में स्थापित हुए।

रामकथा कई वर्षों से भारतीय संस्कृति और सभ्यता का अंग बनकर सभी को प्रभावित करती है। प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में रामकथा का आदर्श रूप विद्यमान है और कथा आज भी उतनी ही लोकप्रिय है।

रामकथा पहले से ही लोक में मौखिक परंपरा में चली आ रही होगी। भारत, दक्षिणी–पूर्वी एशिया, मंगोलिया, ईरान, चीन, जापान, श्रीलंका में वाल्मीकि से लेकर श्रीराम कथा के वर्तमान

अर्थ विवेचन का इतिहास कई खंडों में किया जा सकता है। दक्षिण पूर्व एशिया के इतिहास में कुछ ऐसे प्रमाण मिलते हैं प्राचीन काल से ही रामलीला का प्रचलन था। तथ्य–908 ई. का सम्राट वल्टिंग का शिलालेख थाई नरेश दक्षत्रयी लोकनाथ की राजकवत (1458 ई.) में रामलीला का उल्लेख। माइकेल माइकेस ने बार्म में राजकवत के 1895 ई. में राम नाटक देखा था।

केरल की यह शास्त्रीय नृत्य **कथकली** रामायण के प्रसंगों को नाटकीय ढंग से प्रस्तुत करने के लिए की जाती है। इसमें कलाकारों के विशेष मुखोटे, विस्तृत वेशभूषा और हाव–भाव के माध्यम से पात्रों का चित्रण किया जाता है।

उत्तर भारत में रामायण की कहानियां दो नौटंकी या रामायण मंडली के रूप में भी प्रस्तुत किया जाता है। इसमें संवाद और नृत्य का मिश्रण होता है, जो आम लोगों के बीच बहुत लोकप्रिय है।

आज के दौर में रामकथा के विभिन्न हिस्सों को आधुनिक रंगमंच की तकनीकी का उपयोग करके भी प्रस्तुत किया जाता है। इसमें दृश्यों का निर्माण, प्रमाण, व्यवस्था, ध्वनि, प्रकाश और अभिनेताओं के सशक्त प्रदर्शन के माध्यम से इसे नाटकीय रूप दिया जाता है।

छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में राम कथा को नुक्कड़ नाटक के माध्यम से भी प्रस्तुत किया जाता है। जो समाज के विभिन्न मुद्दों को भी लक्षित करता है।

लोकनाट्य में भिखारी ठाकुर रचित बिदेसिया महत्वपूर्ण हैं जिसमें गीतों की भरमार है जो विभिन्न रागों में रचित हैं। यह राग भारतीय विरासत के प्रतीक हैं जिनमें माधुर्य और आकर्षण विद्यमान हैं।

बिहार के लोक संगीत एक प्रमुख भारतीय संगीत परंपरा है जो राज्य की सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा है। बिहार के लोक संगीत में गीत, ताल, गायन, नृत्य और संगीत के विभिन्न रूप शामिल होते हैं। इसे जनजातीय समुदायों, ग्रामीण क्षेत्रों और किसान समुदायों की जीवनशैली, भावनाएं और विभिन्न सांस्कृतिक उत्सवों के दौरान गाया जाता है।

बिहार के लोक संगीत में विभिन्न प्रकार के गीत होते हैं, जैसे कि जीवनी गीत, विवाह गीत, बारहमासी गीत, वत्सल्य गीत, भजन, श्रावण गीत, कविताएं आदि। इन गीतों में जीवन के विभिन्न पहलुओं को बयां किया जाता है और सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

बिहार के लोक संगीत परंपरा में बागी माखा, झुमर, बिरहा, समद, बचन, थुमरी, चैत्ती,

निर्गुणिया, धुन, गजल, घोड़बंदी, कोथी गीत आदि शामिल हैं। ये गाने स्थानीय वाद्ययंत्रों और संगीतीय उपकरणों के साथ संपन्न होते हैं। गीतों के साथ आमतौर पर ढोलक, मण्डल, ताल, खड़बज, तुरही, सरंगी, बंसुरी, खम्बजा, बांसुरी, झाला, नगाड़ा, ढोल, धोलक, मधुर्तल, शहनाई, दुफ्ली, मंजीरा, सारंगी, खड़बज, सरंगा, सारंग, एकतारा और विदाला जैसे उपकरण उपयोग किए जाते हैं।

इनमें विविधता और रंगबिरंगीता देखी जा सकती है। प्रमुख लोक संगीत रंगों में माना जाता है। बागी माखा जो मुख्य रूप से बागी बाईजान की कविताएँ और गीतों पर आधारित होता है। इसके अलावा, झूमर और बिरहा भी बिहार के लोक संगीत के प्रमुख आंचलिक रूप हैं।

इनका महत्वपूर्ण हिस्सा जगदंबा भवानी के नाम पर आयोजित होने वाले चौथान संगीत का है। इसमें गीतों के माध्यम से माता जगदंबा की पूजा और आराधना की जाती है।

इसके अलावा चैती और समद भी बिहार के प्रसिद्ध लोक संगीत के प्रमुख आंचलित रूप हैं। चैती गीत बिहार के चैत्र मास में आयोजित किए जाने वाले धार्मिक उत्सव चैती नवरात्रि के दौरान गाए जाते हैं। ये गीत माँ दुर्गा की महिमा और आराधना के लिए गाए जाते हैं। समद गीत भागलपुर, मुंगेर, वैशाली, विक्रमशिला, पटना, गया और नालंदा क्षेत्र में लोकप्रिय हैं। ये गीत भगवान शिव की पूजा और आराधना के लिए गाए जाते हैं।

बिहार के लोक संगीत में गीतों के माध्यम से विभिन्न सामाजिक मुद्दों को उठाया गया है, जैसे कि किसानों की जिंदगी, दुष्कर्म, प्रेम, बरसात, बाढ़, विवाह, प्रेम–विवाह, मातृभूमि के प्रति प्रेम, धर्म, न्याय, राष्ट्रीय एकता, स्वतंत्रता संग्राम आदि। इन गानों में सामाजिक संदेश, संस्कृति और ऐतिहासिक महत्व को सुरमय ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोकगीतों को आर्य सभ्यता की वेद श्रुति कहकर इन्हें वेदों के समान पवित्र कहा है तो

महात्मा गांधी ने लोकगीतों को समूची संस्कृति के पहरेदार कहा है।

राष्ट्रीय जीवन की सत्य कथा जानने का प्रामाणिक माध्यम है लोकगीत।

डॉ. रामनरेश त्रिपाठी–लोकगीतों को ग्राम्य गीत कहा है, उनका कहना है कि ये प्रकृति के उद्धार हैं जिनमें केवल लय और माधुर्यता होती है, अलंकार नहीं।

श्याम परमार–लोकगीतों में विज्ञान की तलाश नहीं होती, बल्कि ये मानव संस्कृति के सार और भावों का व्यापक उभार है।

डॉ. सत्येंद्र–लोकगीत वह गीत है जो लोकमानस की अभिव्यक्ति करता हो, जिसमें लोकमानस के भाव संगीत के माध्यम से प्रकट होते हैं।

देवेंद्र सत्यार्थी–लोकगीत किसी संस्कृति के मुंहबोले चित्र होते हैं।

विलियम ग्रिम–लोकगीत जनमानस की कोख से उपजे धरती के गीत हैं, जिनमें पीड़ा, उल्लास, प्रेम, समर्पण जैसे मनोभाव हैं और ये समष्टि की बोली बन जाते हैं।

लोककाव्य का निर्माण विशाल जनसमूह द्वारा होता है, न कि किसी व्यक्ति विशेष द्वारा।

बिदेसिया की उत्पत्ति मुख्यतः बिहार के छपरा जिले के कुतुबपुर गाँव से मानी जाती है। यह लोकगीत और नाट्यशैली उस दौर में जन्मी जब गाँव के लोग जीवनयापन के लिए अपने गाँव छोड़कर शहरों और विदेशों (जैसे कलकत्ता, रंगून आदि) की ओर जाते थे। 'बिदेसिया' शब्द का अर्थ है ऐसा व्यक्ति जो अपने गाँव से दूर, परदेस गया हो।

इस लोकशैली के प्रमुख सर्जक भिखारी ठाकुर थे, जिन्हें 'भोजपुरी का शेक्सपियर' भी कहा जाता है। वे खुद एक अनपढ़ लोक कलाकार थे जिन्होंने सामाजिक कुरीतियों, जाति प्रथा, बाल विवाह और पलायन जैसी समस्याओं को अपने नाटकों और गीतों में उजागर किया।

बिदेसिया लोकगीत विशेषकर प्रवासियों की पीड़ा, उनके परिवारों की विरह वेदना और वापसी की आशा को दर्शाता है।

भिखारी ठाकुर का 'बिदेसिया' नाटक उस व्यक्ति की कहानी है जो जीविकोपार्जन के लिए विदेश चला जाता है और अपने परिवार को भूल जाता है। उसकी पत्नी उसके बिछड़ने के दुःख और उसकी याद में कई कष्ट सहती है।

उनके नाटक और गीत समाज की वास्तविकता का सजीव चित्रण है, जो ग्रामीण जनता में अपनी पहचान रखती है। उदाहरणस्वरूप

देश छोड़ धन मिलल हो,
माई–बाप ना देखे मिलन हो।
धन से बड़ सुख माटी में,
आपन घरवा आ आँगन में।

सास गावत–

बाबू विदेश गइल रे,
अब घरवा कइसे चलइब रे।

बहू गावत–

हमरा से जवन बनेला करीह

बाकिर नींद ना आवे अखियन में।

''दोसर गांववा में गइलें पिया

एही बहाने बन गइल बिदेसिया

पछिताएँ जब पलटबू नजरिया,

छुट गइल मोरा अगिया बैसाखिया।''

''भोर भेल राजा गवनवा करा,

आँखीन में नीर भरि अइल।

रैनू भइली रोवत गुजरालू,

पीके लागल परदेसिया।''

बिदेसिया में प्यारी सुन्दरी के विलाप वर्णित है। जब उसका पति परदेश चला जाता है तो वह बटोही से संदेश भेजती है। इसका एक रूप दृष्टव्य है–

पिया मोर गाइलन परदेस ए बटोही भइया।

रात नाहीं नींद दिन तनी चएनवाँ ए बटोही भइया।

सहतानी बहुते कलेस ए बटोही भइया।

रोवत रोवत हम भइली पगलिनियाँ ए बटोही भइया।

एको न भेजनलन सनेस ए बटोही भइया।

नाहक जवानी हमके दिहलन विधाता ए बटोही भइया।

कुछ दिन में पाक जाइह केस ए बटोही भइया।

इस प्रकार लोक साहित्य में गीतों का महत्वपूर्ण स्थान है। यह गीत भारतीय संस्कृति के मूल आधार हैं। जीवन को इसमें समझा गया है। हमारे जीवन की बदलती परिस्थितियों इसमें समेटने का प्रयास किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

(1) लोक साहित्य विज्ञान–डॉ. सत्येन्द्र, पृष्ठ 3

(2) लोक साहित्य का अर्थ–डॉ. सुनिता शर्मा tward press.com

(3) हिन्दवी (https://www.hindwi.org), लोकगीत

(4) हिन्कुमल–लोकगीत (hindikul.com/Lokgeet)

(5) भारतीय संस्कृति में लोकगीतों का महत्व (http://www.socialresearchfoundation.com)

(6) उपाध्याय डॉ. कृष्णदेव लोक संस्कृति की रूपरेखा लोक भारत प्रकाशन 2009

(7) परमहंस सतीश भारतीय लोकगीत सहयोग प्रकाशन 2003

(8) यादव, प्रो. राम किशोर, लोकनाट्य, के.एल. पचौरी प्रकाशन, लोनी, दिल्ली

Wikipedia

1. Bharatdiscovery.org (भारतकोश)

2. The Hindu (article) newspaper

3. https : //hi.wikipedia.org

4. www.hindisamay.com

5. testbook.com

6. Kavitakash.org